

प्राकृतिक वनस्पति के प्रकार व विस्तार

भारत का अध्याधिक भौगोलिक विस्तार (क्षेत्रफल 32,87,263 km^2) तथा जलवायवीय विविधता ने प्राकृतिक वनस्पति की विविधता को विकसित किया है। नवीन जैविक विविधता सर्वेक्षण के अनुसार भारत में 2.5 लाख प्रकार की जैविक विविधता है जिसमें से लगभग 1 लाख प्रकार की वनस्पतिक विविधता पायी जाती है। भारत विश्व के उन कुछ देशों में आता है जहाँ विषुवतीय वनस्पति से लेकर ध्रुवीय वनस्पति पायी जाती है।

आधिकार भूगोल वैज्ञानियों ने भारत को 7 प्राकृतिक वनस्पति प्रदेशों में विभाजित किया है -

1. उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन
2. उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी वन
3. उष्ण कटिबन्धीय झाड़ी एवं झाड़ू स्तरीय प्रकार के वन
4. उष्ण कटिबन्धीय शुष्क कटीले वन
5. उपोष्ण पर्वतीय वन
6. तटीय वन
7. हिमालय प्रदेश के वन

1. उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन - ये वन ऐसे क्षेत्रों में

पाए जाते हैं जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 2000 mm से अधिक होती है। इन क्षेत्रों में अण्डमान निकोबार द्वीप समूह, उत्तर-पूर्वी भारत में 1061 mm औसत वर्षा का प्रदेश, पार्श्वी घाट पर्वतीय प्रदेश का पार्श्वी ढल, तथा मालाबार तटीय प्रदेश में 1340 mm औसत वर्षा का क्षेत्र एवं हिमालय का तराई क्षेत्र आते हैं।

इन प्रदेशों की वनस्पति सदाबहार होती है तथा इसके फल चौड़े होते हैं। वृक्षों की लम्बाई 30-60 m होती है और लकड़ी कठोर होती है। इन प्रदेश के वनों की तुलना विषुवतीय सदाबहार वन से की जाती है किन्तु सभी अर्थों में विषुवतीय सदाबहार वन अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में

पाए जाते हैं।

इन वनों में आधिक्यतः खड, मछोगनी, छबोनी, लोह-काण्ड, बांस, ताड, साल, जंगली आम आदि पाए जाते हैं। दक्ष के वर्षों में इन क्षेत्रों खड, कदवा, बांस और लह ताड की लुप्ति प्रारम्भ की गई है। इन काष्ठों के क्षेत्र को वनीय क्षेत्र में ही रखा गया है। संसाधनात्मक दृष्टि से इन वनों का महत्व कम है किन्तु इसका उपयोग जघानन की लक्ष्य के लिए अधिक है।

2- उष्ण-कठिब-धीम मानसूनी वन - \rightarrow वर्षा \rightarrow 100-200 cm. इसके अन्तर्गत मरि

का अधिकतर क्षेत्र आता है। इसका विस्तार मुख्य रूप से U.P., बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, M.P., प. बंगाल, असम, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडू तथा कर्नाटक राज्य हैं। क्षेत्र में वर्षा की पर्याप्त मात्रा प्राप्त होती है लेकिन 70% से अधिक वर्षा तीन महीनों के अन्तर्गत होती है।

शीत ऋतु तथा ग्रीष्म ऋतु के पूर्वार्ध आदि शुष्क होता है। ग्रीष्म ऋतु के पूर्वार्ध में तापमान 24°C से अधिक हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप वृक्ष वाष्पोत्सर्जन होता है। मूल मूला में दरारें पड़े जाती हैं और नमी की कमी के कारण वृक्ष पत्ते गिरा देते हैं। वर्षा के प्रारम्भ होने पर नए पत्ते भी आ जाते हैं जो 8-9 महीने तक वृक्ष में लगे रहते हैं। इस प्रदेश के वृक्षों की औसत ऊंचाई 20-45 m होती है और ये थोड़े पत्ते वाले होते हैं।

उष्ण मानसूनी वन के वृक्ष आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। इस वन प्रदेश में साल, शीशम, सागवान, चंदन, आइरन वुड, रोज वुड, आम, छबोनी, इत्यादि पाये जाते हैं। महुआ, पखरा, तेंदू, व बांस के वन इस प्रदेश की विशेषता हैं। इसी प्रदेश की सतह पर स्वर्ण धास बहुता से पायी जाती है। बांस व स्वर्ण धास ही भारतीय काठज उद्योग का आधार स्तम्भ हैं। चंदन की लकड़ी विश्व की सजीविक कीमती

झकड़ी है। इसी प्रदेश में वृषि व अन्य कार्यों के लिए पत्तों का भारी विन्यास भी हुआ है।

3- उष्णकटिबंधीय झाड़ी व स्टेपी प्रकार के वन ये वन ऐसे

क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 50-100 cm तक होती है। ~~इस~~ वन प्रदेश की विस्तार पश्चिमी मध्य प्रदेश, पूर्वी राजस्थान, गुजरात, वृष्टि घाटा प्रदेश, दक्षिण-पूर्वी तमिल-नाडू, दक्षिणी पंजाब, दक्षिणी हरियाणा में है। वृष्टियों की औसत ऊँचाई 6-8 मी. तक होती है। वृष्टियों की जड़ें लम्बी होती हैं, ताकि गहराई से जल प्राप्त कर सकें तथा खाल मोटी होस है जिससे ये जल को अपने अन्दर संग्रहित कर सकें। वृष्ट में झाड़ी या केटीली वनस्पति की विशेषताओं का आचमन देने लगता है। यहाँ पाए जाने वाले वृष्टों में सबसे प्रमुख है तथा खजूर भी खूब पाए जाते हैं। स्टेपी विशेषताओं वाले घास भी मैदान भी पायी जाती है लेकिन ये मध्य ऊँचाई स्टेपी की तुलना में आर्थिक कृषि होती है। वर्षा की कमी व उच्च तापमान के कारण वनस्पति का गहन विकास नहीं हो सका है। यह प्रदेश संस्रधानात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं है किन्तु वृष्ट के वृक्ष पर घाह के कीटों का पालन लाभकारी है। वृष्टि घाटा प्रदेश में इस तरह के प्रयास किये जा रहे हैं।

4- उष्णकटिबंधीय शुष्क कंटीले वन ये ऐसे क्षेत्र हैं

जहाँ वार्षिक वर्षा 60 cm से कम होती है। इसका विस्तार पश्चिमी राजस्थान, कच्छ का रन, पठारी भाग का पूर्वी घाटा प्रदेश एवं बड़दाख का पठार में है। वर्षा की कमी तथा शुष्क शीत ऋतु के कारण मृदा में नमी की अत्यधिक कमी होती है। इन क्षेत्रों की वनस्पति की दो मुख्य विशेषताएं निम्न हैं-

i) नमी की प्राप्ति के लिए जड़े गहरी होती हैं, ये 8 संस्करण तक बढ़ जाते हैं।

ii) सभी वनस्पति नमी संग्रहण हेतु अपने विशिष्ट दृष्टिकोण को विकसित करती हैं। जैसे, परिनामस्वरूप पत्ते सिंकुडकर कटीले हो जाते हैं। ऐसी वनस्पति को *xerophytes* कहते हैं।

इस प्रदेश में खजूर स्वयंप्रचलित महत्वपूर्ण वृक्ष है। खजूर, नागफनी, बबूल के विविध प्रकार इस मरु-स्थलीय प्रदेश की वि. प्रमुख वनस्पतियाँ हैं।

5- उपोष्ण पर्वतीय वन - प्रायद्वीपीय पठार के पर्वतीय क्षेत्रों में पाये जाने वाले उपोष्ण पर्वतीय वन कहलाते हैं। ये वन दो प्रकार के होते हैं -

i) नम पर्वतीय वन - ये वन 1070 मी से 1600 मी. के मध्य पाये जाते हैं। इनके प्रमुख श्रेणियाँ सतपुड़ा पर्वत, पाल्नी हिल्स, पार्वती घाट, नीलगिरी, अन्नामलाई, काडीमम आदि हैं।

ii) नम शीतोष्ण वन - ये वन 1600 मी से अधिक ऊँचाई पर पाये जाते हैं। तमिलनाडु में इन्हें 'सोलास' कहा जाता है। इन वनों की वृक्षों का वन आवरण वन से की ~~व्यवस्था~~ है। इस क्षेत्र की मृदा में पश्चिमी मृदा होती है। वृक्षों की ऊँचाई 15-45 मी तक होती है। इनकी लम्बी मूलाग्रम होती है। ग्रैंड पाप जाने वाले वृक्षों में आयरन वुड, रोजवुड, प्रमुख हैं; वृक्षों के बीच में रस्ताई घास भी पायी जाती है।

⇒ ये वन ठंडे कठिबन्धीय सदाबहार वन से मिलते जुलते हैं। किन्तु ये ठंडे घने नहीं होते हैं। दक्षिण भारत में इस प्रकार के वन 1500 मी से 1625 मी की ऊँचाई तक मिलते हैं। इनका सबसे अधिक विकास नीलगिरी, रोजराय, अन्नामलाई और काडीमम की पहाड़ियों में है तथा महाराष्ट्र में महाबलेश्वर तथा मीरजपुर में पंजगढ़ी में है। इन्हें मुख्यतः चैम्पन, देवदार, बबूल, हरिण, चीड़, बेटुला, हलन्स आदि वृक्ष पाये जाते हैं। अनुकूल परिस्थितियों में ये 30-40 मी तक ऊँचे हो जाते हैं। इनके नीचे सदैव झाड़ियों की आधिक्यता होती है।

6- द्वीप वन भारत की लम्बी तटरेखा होने के कारण वृक्ष क्षेत्रों में वनों का विकास हुआ है। भारत के द्वीप वनों को 3 वर्गों में रखा जा सकता है।

i) ज्वारीय वन - ये निम्न डेल्टाई क्षेत्र में पाये जाते हैं। ये सुन्दर वन प्रकार भी होते हैं। गंगा डेल्टा और गोदावरी डेल्टा को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

a) डेल्टा के ऊपरी भाग में सुन्दरी वृक्ष व बेट वृक्ष के सघन वन होते हैं।

b) डेल्टा के निम्न भाग में कम ऊँचाई के सुन्दरी वन पाये जाते हैं और इनकी सतह पर पथरीय मृत्ती और लवण होते हैं। गंगा डेल्टा का सुन्दर वन विश्व का सर्वश्रेष्ठ का डेल्टाई वन है।

पूर्वी द्वीप प्रदेश की प्रायः सभी नदियाँ डेल्टा का निर्माण करती हैं। डेल्टाई प्रदेश में उच्च ज्वार के समय जल का तेजी से गैरव होता है, जिससे प्रभाव से डेल्टाई वनों का विकास होता है। भारत के करीब एक लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में मैंग्रोव वनों का विस्तार हुआ है।

ii) भारत के वन - मुख्यतः पार्वतीय द्वीप प्रदेश में पाए जाते हैं। ये वस्तुतः एक प्रकार की कृषि हैं। जिसके अन्तर्गत अपने प्राचीन भूमि को द्वीप प्रदेश में रखा जाता है जबकि ताड़ के वृक्ष तमिलनाडु के द्वीप प्रदेश की विशेषता है। वर्तमान में तमिलनाडु के कृषक इसका विकास सामाजिक वानिजी और कृषि वानिजी के अन्तर्गत कर रहे हैं।

इनके अतिरिक्त द्वीप प्रदेशों में इरोटोरिया, ताज, बेट, सरल्लोस, राजफरीया, सोनेरीटा, कोनिग्स आदि किस्म की वनस्पति भी पायी जाती है।

२. हिमालय प्रदेश के वन - इस प्रदेश के वनों के

विकास में उष्णवर्ष, अर्धशीतोष्ण, वर्षा का विवरण, पर्वतों का ढल आदि कारकों का योगदान है। हिमालय के वन प्रदेश को दो भागों में बाँटा जा सकता है -

i) पूर्वी हिमालय के वन ii) पार्वतीय हिमालय के वन

i) पूर्वी हिमालय के वन - इस वन प्रदेश की वनस्पति को पॉय वनों में रखा गया है।

a) अर्ध उष्ण कटिबंधीय वन - तराई क्षेत्र से लेकर 1520 मीटर ऊँचाई तक की सदाबहार वन मिलते हैं। इसमें साल, शीशम, सेमल, महुआ, चकन आदि प्रमुख वृक्ष हैं।

b) शीतोष्ण कटिबंधीय वन - 1520 मीटर से 2740 मीटर के मध्य विकसित वनस्पति जिसमें ओक, बर, मैपिल, मॉगनोलिए, लोरेल आदि मुख्य हैं।

c) शीत शीतोष्ण कटिबंधीय वन - 2740 मीटर से 3660 मीटर की ऊँचाई के मध्य का क्षेत्र जिसमें प्रमुख वृक्ष चीड़, केवदार, स्प्रूस, विहीकर, रोडेडोडोस आदि हैं।

d) पर्वतीय वन (अल्पाइन वन) - 3660 मीटर से 4875 मीटर के क्षेत्र में अल्पाइन वनस्पति पायी जाती है। इसमें पाये जाने वाले मुख्य वृक्ष हैं - सिल्वर, फर, पानीकर, रोडेडोडोस आदि।

e) डुण्डा वन (दोरी घास) - 4875 मीटर से 5100 मीटर के मध्य दोरी-दोरी घास व सुन्दर पहाड़ों के पोंचे मिलते हैं। ये क्षेत्री प्रारंभ काल में ही विकसित होत हैं।

f) 5100 मीटर के पर्याप्त हिमाच्छादित क्षेत्र पाया जाता है जहाँ किसी भी प्रकार की वनस्पति का विकास नहीं हो पाता।

ii) पार्वतीय हिमालय के वन - इससे भी कहीं वनों में विमान जित किया गया है -

व) अर्द्ध उष्ण कटिबन्धीय वन - 1520mm से ऊँचाई तक विस्तृत। जिसमें मुख्य वृक्ष खल, शीशम, जामुन, पीपल, बांस, ताड़ आदि हैं।

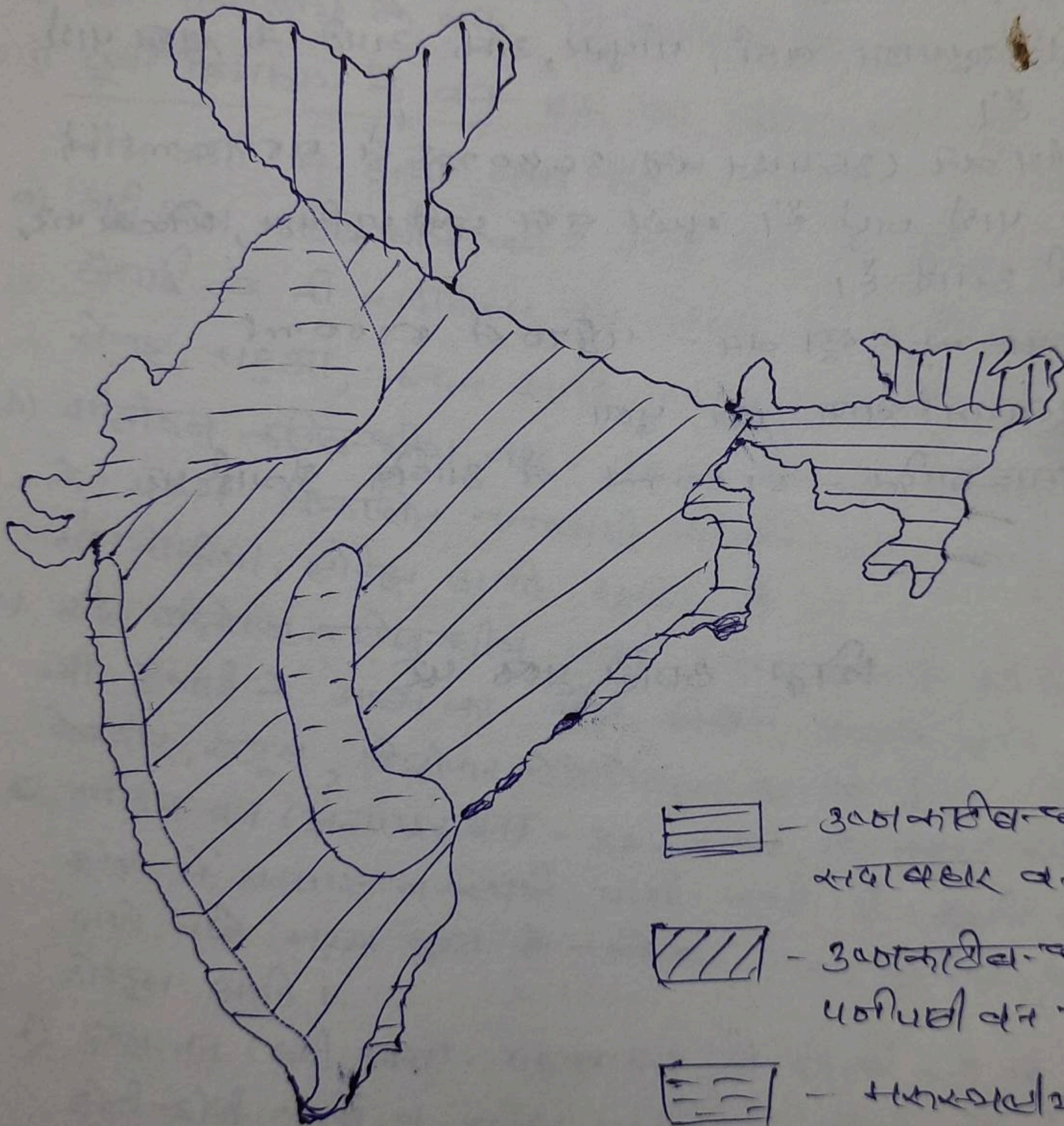
ब) शीतोष्ण कटिबन्धीय वन - 1520mm से 3660mm तक यह वन क्षेत्र विस्तृत है। जिसमें मुख्य रूप से चीड़, देवदार, स्प्रूस, स्यूपाइन, बर्ची, पीपुलर, ओक आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।

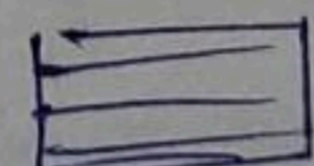
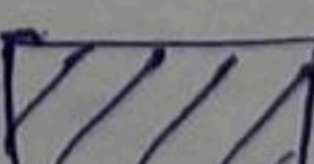
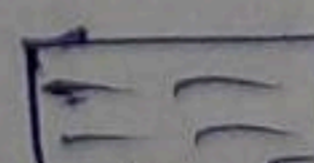

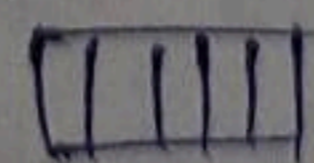
घ) पर्वतीय वन (अल्पपत्र वन) 3660mm से 4570mm तक बीच पाये जाते हैं। मुख्य वृक्ष स्प्रूसी, पृनीफर, स्लेव्बर फर, बर्ची आदि हैं।

द) सह्यद्रु वन - 4570 से 6100mm
मुख्यतः चास एवं पुष्प

च) हिमालय हिम - 6100mm से अधिक ऊँचाई पर

भारत में प्राकृतिक वनस्पति का वितरण



-  - उष्णकटिबंधीय सदाहर वन
-  - उष्णकटिबंधीय पर्णपत्र वन या मानसूनी वन
-  - मरुस्थलीय वन
-  - ज्वारीय वन
-  - हिमालय की वनस्पति